अनिरूद्ध प्रसाद विमल की कथा पुस्तक शुकरी

बेबी कुमारी

अंगिका भाषा में लिखित अनिरूद्ध प्रसाद विमल की तीसरी पुस्तक का नाम है– शुकरी। समय साहित्य सम्मेलन पुनसिया (बाँका) द्वारा इसका प्रकाशन 1999 ई0 में हुआ। चौंसठ पृष्ठों की इस पुस्तकों में पृष्ठ नौ से 62 तक कुल 54 पृष्ठों में 6 कहानियाँ संकलित हैं। लेखक ने अपने समर्पण में जो लिखा है, कहानियों से गुजरते हुए उसकी सत्यता स्वयं प्रमाणित होती जाती है। उदाहरण के तौर पर प्रथम कहानी 'गितिया' का उल्लेख किया जा सकता है। इस कहानी में लेखक ने अपने अनुभव जगत और समाज सत्य को यथारूप चित्रित किया है। लेखक स्वयं भी कथाकार नहीं प्रवाचक रूप में उपस्थित है। लेखक अपने पड़ोसी बसंत बाबू से बातचीत कर रहा है कि तभी एक दूसरा पड़ोसी शंकर साव आ उपस्थित होता है। उसके आने का पहला प्रयोजन है कि उसे खेत से फसल घर लाने के लिए बैलगाड़ी की जरूरत है क्योंकि–उनकी नई गाड़ी घर से चोरी चली गई है। दूसरी समस्या है कि उनकी बेटी 'गितिया' जिसे छोड़ कर पति ने दूसरी शादी कर ली और गितिया माँ बाप के सर का बोझ बन गई है, उसके लिए पंचैती कर देना।